यूरो-कम्युनिज्म अतीत के संशोधनवाद की एक नयी किस्म

1970 के दशक के मध्य से लेकर '80 के दशक तक पश्चिमी यूरोप के विकसित पूंजीवादी देशों की कम्युनिस्ट पार्टियों के भीतर 'यूरो-कम्युनिज्म' के नाम से एक धारा पैदा हुई थी। विशेष तौर पर, फ्रांस की कम्युनिस्ट पार्टी, इटली की कम्युनिस्ट पार्टी और स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी ने 'यूरो-कम्युनिज्म' के नाम की संशोधनवादी धारा को परवान चढ़ाने में अग्रणी भूमिका निभायी थी। सत्तर के दशक के अंत में साम्राज्यवादियों-पूंजीवादियों के अखबारों, पत्र पत्रिकाओं में, पूंजीवादी विद्वानों-विशेषज्ञों की गोष्ठियों-सेमिनारों में 'यूरो-कम्युनिज्म' के प्रस्तोताओं की बढ़-चढ़कर चर्चा व प्रशंसा होती थी। आज 'यूरो-कम्युनिज्म' की चर्चा नहीं हो रही है। इसका एक कारण यह है कि '89-90 में सोवियत संघ और पूर्वी यूरोप की संशोधनवादी नेतृत्व में चलने वाली सत्ताओं का स्थान खुले पूंजीवादी सत्ताओं ने ले लिया है। इसलिए सोवियत संघ की संशोधनवादी कम्युनिस्ट पार्टी के विरोध में खड़ी होने वाली पार्टियों का समर्थन करने के लिए साम्राज्यवादियों पूंजीवादियों को अब कोई जरूरत नहीं रह गई है। दूसरे, अब 'यूरो-कम्युनिस्ट' पार्टियां इतनी ताकतवर नहीं रह गयी हैं, जितनी वे '70 व '80 के दशक में थीं। इसलिए भी वे अब चर्चा में नहीं हैं।

लेकिन एक विचार के रूप में यूरो-कम्युनिज्म अब भी मौजूद है। उसकी पूंजीवादी समाज के समाजवादी रूपान्तरण की संशोधनवादी अवधारणा, पूंजीवादी राज्य के बारे में उसका दृष्टिकोण, सर्वहारा वर्ग की पार्टी की उसकी अवधारणा, सर्वहारा अधिनायकत्व के बारे में उसके विचार, सोवियत संघ के स्टालिन कालीन समाजवाद के बारे में उसके विचार इत्यादि कमोबेश रूप में आज के संशोधनवादियों द्वारा घोषित-अघोषित रूप में अपनाये जा रहे हैं। कम्युनिस्ट क्रांतिकारियों को इन संशोधनवादियों को बेनकाब करने और खुद इन भटकावों का शिकार होने से बचने के लिए संशोधनवाद की 'यूरो-कम्युनिज्म' की धारा को भी समझने की जरूरत है।

यूरो-कम्युनिज्म प्रस्तुत करने वाली कम्युनिस्ट पार्टियां–फ्रांसीसी, इटालवी और स्पैनी– महान बहस के दौरान ख्रुश्चेवी संशोधनवाद के पक्ष में खड़ी थीं। इन्होंने खुलकर चीन की कम्युनिस्ट पार्टी और अल्बानिया की मजदूर पार्टी की सही मार्क्सवादी-लेनिनवादी अवस्थितियों का विरोध किया था। लेकिन वे इतने पर ही नहीं रुकीं। विशेषतौर पर इटली की कम्युनिस्ट पार्टी ने ख्रुश्चेव से और आगे जाकर सोवियत समाजवादी मॉडल पर ही सवाल उठाना शुरू कर दिया। सोवियत संघ की

संशोधनवादी पार्टी का नेतृत्व चाहता था कि दुनियाभर की संशोधनवादी पार्टियां उसकी अगुवायी में चलें। लेकिन अब पश्चिमी यूरोप की ये पार्टियां किसी केन्द्र को स्वीकार करने को तैयार नहीं थीं। इन्होंने बहुकेन्द्रवाद की तर्ज पर काम करना शुरू कर दिया। स्पैनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता सांतियागो कैर्रिलो ने 1977 में "'यूरो कम्युनिज्म' और राज्य" नाम से एक पुस्तिका प्रकाशित की, जिसमें उसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद विरोधी समूची लाइन को प्रतिपादित किया। लेकिन उनके पतन का सिलसिला यहीं नहीं रुका। अप्रैल, 1978 में, स्पैनी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी नौवीं पार्टी कांग्रेस में घोषित किया कि वे अब अपने को मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी नहीं कहेंगे बल्कि इसके स्थान पर वे "मार्क्सवादी-लेनिनवादी जनवादी क्रांतिकारी पार्टी" स्वीकार करेंगे। सांतियागो कैर्रिलो ने घोषित किया कि "लेनिनवाद को हमारे युग का मार्क्सवाद कहना अस्वीकार्य है।" इसके एक साल बाद अप्रैल, 1979 में इटली की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी 15 वीं कांग्रेस में अपने संविधान से यह प्रावधान हटा दिया कि उनकी पार्टी के सदस्यों को मार्क्सवाद-लेनिनवाद में पारंगत होना चाहिए और इसकी शिक्षाओं को लागू करना चाहिए। बर्लिंगर एण्ड कम्पनी ने घोषित किया, "'मार्क्सवाद-लेनिनवाद" का सूत्र हमारी सैद्धान्तिक व विचारधारात्मक विरासत की समूची सम्पदा को नहीं व्यक्त करता।" इसके एक महीने बाद मई, 1979 में फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी 23 वीं कांग्रेस में प्रस्तावित किया कि उनको अपनी पार्टी के दस्तावेजों में मार्क्सवाद-लेनिनवाद का जिक्र करना छोड़ देना चाहिए और इसके स्थान पर "वैज्ञानिक समाजवाद" का इस्तेमाल करना चाहिए। इस तरीके से, इन तीनों पार्टियों ने मार्क्सवाद-लेनिनवाद से औपचारिक तौर पर भी नाता तोड़ लिया। हालांकि व्यवहार में वे पहले ही तोड़ चुके थे। मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धान्तों में तोड़-मरोड़ करने वाले संशोधनवादी अंततः मार्क्सवाद-लेनिनवाद के परित्याग करने तक पहुंच गये।

प्रस्तुत लेख में यह विश्लेषण करने की कोशिश की गयी है कि कैसे एक समय की शानदार व गौरवशाली संघर्ष करने वाली फ्रांसीसी, इटालवी और स्पैनी कम्युनिस्ट पार्टियां बाद में पतित होकर 'यूरो कम्युनिज्म' की प्रतिपादक संशोधनवादी पार्टियां बन गयीं और अंततः इन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद से सम्बंध-विच्छेद कर लिया।

I
यूरो-कम्युनिज्म क्या है?

खुद यूरो-कम्युनिज्म के प्रवक्ताओं की जुबान से उसके बारे में जानें। इटली की 'कम्युनिस्ट' पार्टी के नेता एनरिको बर्लिंगर ने जून, 1976 में बर्लिन में 29 संशोधनवादी पार्टियों के सम्मेलन में कहा था कि 'यूरोप की कई पार्टियां समाजवाद

के नये रास्ते और समाजवादी समाज की नई अवधारणा की खोज में विचारों की समरूपता और साझे लक्षणों तक पहुंचे। हमने, स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी, फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी और ग्रेट ब्रिटेन की कम्युनिस्ट पार्टी के साथ एक घोषणा में हस्ताक्षर किये, जिसमें यह कहा गया था:

> "इस नयी किस्म की व्याख्या और खोज को कुछ लोग इसे 'यूरो-कम्युनिज्म' के बतौर जिक्र करते हैं।
>
> "स्पष्टतया हमने इस शब्दावली को नहीं गढ़ा है, लेकिन यह तथ्य ही कि इसने इतना व्यापक प्रचलन हासिल कर लिया है जो पश्चिमी यूरोप के देशों में समाजवादी दिशा में समाज के रूपान्तरण की नयी किस्म द्वारा समाधान देखने की आकांक्षा की गहराई और विस्तार को दर्शाता है।" ('Berlin Conference of the Communist Parties of Europe,' C P I (M), Calcutta, 1976, P.57, quote taken from 'Euro-communism'- An Analytical Study By Ajit Roy, Page-12)

कुछ इसी तरह कैर्रिलो अपनी पुस्तक की प्रस्तावना में यूरो-कम्युनिज्म की व्याख्या करता है:

> " पाठक को शायद इस बात पर आश्चर्य हो कि मैंने आगे के पृष्ठों में बारम्बार 'यूरो-कम्युनिज्म' शब्दावली का इस्तेमाल किया है। यह अत्याधिक फैशन में है, और हालांकि इसको कम्युनिस्टों ने नहीं गढ़ा है तथा इसका वैज्ञानिक मूल्य संदेहास्पद हो सकता है, लेकिन जनता के बीच इसने एक अर्थ ग्रहण कर लिया है और, सामान्य शब्दावली में, मौजूदा कम्युनिस्ट रुझानों में एक को बताने का काम करता है।" ... ... (Eurocommunism and the state, Santiago Carrillo, Lawrence and Wishart, London,1978, P-8)

और आगे,

> "इसलिए 'यूरो-कम्युनिज्म' शब्द उस समय तक एक वास्तविकता के बतौर हमारे अपने को मानने के लिए हमें बाध्य करता है जब तक हम एक बेहतर परिभाषा नहीं पा लेते। इसके साथ ही एक चेतावनी देना चाहता हूं, यद्यपि, कि यह प्रवृत्ति न तो कोई संगठन है, न ही इसके पास साझा कार्यक्रम है, तथापि इसकी निर्विवाद रूप से एक विशिष्ट प्रकृति है जो अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में, जैसे कि पूर्वी बर्लिन में जून, 1976 में यूरोपीय कम्युनिस्ट पार्टियों के (सम्मेलन में), अपने को विभिन्न तरीकों से प्रदर्शित करता है।" (I b i d. P-9)

यूरो-कम्युनिज्म के एक प्रवक्ता के अनुसार,

> "... और यदि यूरो-कम्युनिज्म की संक्षिप्त परिभाषा पूछी जाय, तो मैं कहूंगा: यूरो-कम्युनिज्म नये सिद्धान्तों, नये राजनीतिक व रणनीतिक विचारों का समूह है जो कई कम्युनिस्ट पार्टियों के बीच विकसित हुआ है। ये हमारे समय के संकट द्वारा पैदा की गयी समस्याओं का नया जवाब देना चाहती हैं। यह जनवादी तरीकों के

साधनों द्वारा समाज का समाजवादी रूपांतरण हासिल करने के रास्ते तलाशना चाहती है, और ऐसे नये समाजवादी समाज की ओर आगे बढ़ना चाहती है जो मनुष्य की आजादी की पूरे सम्मान पर, बहुलवाद पर और सभी के साथ बेहतर सामाजिक व्यवहार पर आधारित हो। संक्षेप में, यह मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को समाप्त करना चाहती है। यदि दूसरे तरीके से कहा जाय तो यूरो-कम्युनिज्म का लक्ष्य जनवाद और समाज के समाजवादी रूपान्तरण के बीच नये सम्बंधों की स्थापना है।

"यूरो-कम्युनिज्म का विश्वास है कि पश्चिमी यूरोप के औद्योगिक तौर पर विकसित समाज में जहां बड़ी इजारेदारियों और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का आज वर्चस्व कायम है, पूंजीवादी समाज को सिर्फ जनवाद के तरीके से हटाया जा सकता है। इसका विश्वास है कि वर्तमान व्यवस्था को हटाने में समर्थ समाजवादी व्यवस्था में समाजवाद को ऐसा होना होगा जिसमें जनवाद अपनी पूर्णतम अभिव्यक्ति पायेगा।" (From, Branko Pribicevic Archive, What is Eurocommunism), www. marxist. org. (अनुवाद हमारा)

यूरो-कम्युनिज्म के प्रवक्ताओं की नजर में न तो यह कोई कम्युनिज्म की संक्रमणकालीन मंजिल है और न ही यह कोई संगठन है। वे इसे साझा कार्यक्रम के आधार पर भी नहीं खड़ा करते। लेकिन एक बात में उनमें समानता है। समाजवाद तक जाने के नये रास्ते और समाजवादी समाज की नयी अवधारणा के बारे में इन पार्टियों की एक राय है। इनका प्रस्थान बिंदु यही है। ये पार्टियां खुद को पूंजीवादी दायरे में काम करने वाली सुधारवादी पार्टियों में तब्दील कर चुकी थीं। इन्होंने मार्क्सवाद-लेनिनवाद से विश्वासघात करने का रास्ता पहले ही अपना लिया था। अब ये एक मुकम्मिल विचारधारा, कार्यक्रम, रणनीति और पार्टी के सांगठनिक उसूल लेकर सामने आये थे जो पतित सामाजिक-जनवादी पार्टियों के समकक्ष था।

II

यूरो-कम्युनिज्म समाजवाद तक जाने का नया रास्ता

यूरो-कम्युनिस्ट समाजवाद तक जाने के नये रास्ते की बात कर रहे हैं। यह नया रास्ता क्या है? कैरिलो के अनुसार,

"आज समाजवाद तक जाने के जनवादी रास्ते की समस्या के बारे में पहुंच, और जनवाद का अर्थ, और समाजवाद का चरित्र और उसकी अंतर्वस्तु का मतलब उन विचारों और समाधानों की निंदा करना है जिन्हें अन्य समयों में मैं न्यायसंगत ठहराता था। मैं आगे के

पृष्ठों में अपनी खुद की पूरी जिम्मेदारी के साथ उन्हें रख रहा हूं। ऐसा करने में मेरा दृढ़ विश्वास है कि मैं और हम सभी जो इन कार्य दिशाओं पर खोजबीन करने के काम में लगे हुए हैं, क्रांतिकारी मार्क्सवाद के बुनियादी तत्वों के प्रति सच्चे हैं और उनको स्वीकार करते हैं। हम अतीत की तरह ही कम्युनिस्ट हैं। हम पतनशील साम्राज्यवादी पूंजीवाद के समक्ष "अपना हाथ खड़ा" करने की कोशिश नहीं कर रहे हैं बल्कि हमें इसके उन्मूलन को तेज करना है। हम सामाजिक जनवाद के खेमे की ओर नहीं जा रहे हैं जिसके विरुद्ध हम विचारधारात्मक तौर पर प्रहार जारी रखे हुए हैं। हम मार्क्सवादी के बतौर-विकसित देशों में जहां हम सत्तर के दशक में काम कर रहे हैं- कार्य करना चाहते हैं।" (Ibid, P-18-19, अनुवाद हमारा)

कैरिलो की मार्क्सवाद के प्रति दुहाई देने की बात को एक तरफ करके देखा जाय तो उसके द्वारा निर्धारित कार्यदिशा की मूल बात यह है कि वह समाजवाद तक जाने के जनवादी रास्ते की बात करती है। कैरिलो इस मामले में कोई नये नहीं हैं। इसके पहले इटली की कम्युनिस्ट पार्टी के तोगिलियाती इस रास्ते में जा चुके थे और वस्तुतः कैरिलो तोगिलियाती से सूत्र ग्रहण करते हैं। हालांकि कैरिलो दावा कर रहे हैं कि इस रास्ते की हिमायत करके सामाजिक-जनवाद के खेमे की ओर नहीं जा रहे हैं। लेकिन सामाजिक जनवाद का समाजवाद की ओर जाने का रास्ता क्या इससे अलग था? काउत्सकी ने 1912 में कहा था, "अब तक हमारे राजनीतिक संघर्ष का ध्येय संसद में बहुमत हासिल करके राजसत्ता पर विजय प्राप्त करना है और संसद को सरकार की मालिक में तब्दील करना है।" इसके बारे में लेनिन ने अपनी पुस्तक "राज्य और क्रांति" में कहा था, "यह विशुद्ध और निकृष्टतम अवसरवाद के सिवाय और कुछ नहीं है।"

यूरो कम्युनिस्ट तोगिलियाती से प्रेरणा ग्रहण करते हैं। तोगिलियाती ने 1955 से ही इटली के पूंजीवादी संविधान में समाजवादी प्रेरणा को खोज लिया था। 1962 तक इटली की 'कम्युनिस्ट' पार्टी ने समाजवाद के अपने रास्ते को पूंजीवादी संविधान के भीतर तलाश लिया था। 1962 में इटली की 'कम्युनिस्ट' पार्टी की दसवीं कांग्रेस में यह घोषित किया गया था,

" समाजवाद का इटालवी रास्ता संविधान में वर्णित नये राज्य के निर्माण से होकर गुजरता है।" इटली की कम्युनिस्ट पार्टी की दसवीं कांग्रेस की थीसिसों में कहा गया कि इस रास्ते का मतलब है कि संविधान की रोशनी में राज्य के रूपान्तरण की मांग करना और उसे लागू कराना, राज्य के भीतर ही सत्ता की नई अवस्थितियां जीतना, समाज के समाजवादी रूपान्तरण को धक्का देकर आगे बढ़ाना और इसका मतलब है कि संवैधानिक कानूनियत के भीतर इटली का समाजवादी रूपान्तरण को चलाने में सक्षम सामाजिक व राजनीतिक ब्लॉक तैयार करना। उन्होंने यह भी प्रस्तावित किया "संवैधानिक सुगठता की पूरे तौर पर स्वीकार तथा रक्षा करते हुए राज्य के वर्ग

स्वभाव और वर्ग लक्ष्यों का विरोध करना, समाजवाद की ओर विकसित करने में समर्थ प्रगतिशील जनवाद के रास्ते पर चलने के लिए राज्य को धक्का देने में पर्याप्त और नपी तुली कार्यवाही करना।"
(From "thesis for the tenth congress of C.P.I. I, Unita sullement", Sept, 13, 1962 Quoted From "the Documents of the Great Debate" Vol. 3. Antarrastriya Prakashan. Page 207-208)

कैरिलो और दूसरे यूरो-कम्युनिस्ट जनवादी तरीके से पूंजीवादी समाज का रूपान्तरण समाजवादी समाज में करना चाहते थे, यह रास्ता उन्हें तोगिलियाती से मिला था। कैरिलो ने तोगिलियाती, बरलिंगर, मारचाइ, ख्रुश्चेव और टीटो की अवसरवादी प्रस्थापनाओं और दृष्टिकोणों का समाहार करते हुए उन्हें क्रमबद्ध करके 'यूरो-कम्युनिज्म' और राज्य'' में पेश किया। उसने यह पुस्तक लेनिन की मशहूर पुस्तक "राज्य और क्रांति" के विरोध में लिखी थी। इस पुस्तक के माध्यम से उसने राज्य की मार्क्सवादी अवधारणा का खण्डन करने की नाकाम कोशिश की थी। ऐसा करने के पीछे उसका मुख्य उद्देश्य मार्क्सवाद-लेनिनवाद से उसकी गद्दारी को न्यायसंगत ठहराना था तथा क्रांति और समाजवाद के विचार पर प्रहार करना था।

कैरिलो की इस पुस्तक में ये विचार प्रतिपादित किये गये :

"यह सवाल तय करने का है कि परम्परागत जनवादी संस्थाओं की अंतर्वस्तु बदलते हुए, इनको नये रूपों से परिपूरित करते हुए जो विस्तारित होकर राजनीतिक जनवाद को और ज्यादा दृढ़ता से स्थापित करे, क्या यह (समाजवादी रूपान्तरण-ले.) जनवाद के नियमों को बगैर तोड़े सम्भव है। हम स्पैनी कम्युनिस्ट और विकसित पूंजीवादी देशों की अन्य पार्टियां घोषित करती हैं कि यह संभव है। यह तर्क कि इन रूपों के अंतर्गत मेहनतकश अवाम के प्रभुत्व का अभी तक एक भी उदाहरण नहीं है, इसका कोई वैज्ञानिक मूल्य नहीं है। यह जड़सूत्रवादी, अनुदारवादी अवधारणा से मेल खाता है कि *चीजें हमेशा वहीं बनी रहेंगी*- यह ऐसा विचार है जिसे इतिहास ने बहुधा झुठला दिया है। चीजें हमेशा एक सी नहीं बनी रहतीं, चाहे *विशिष्ट ऐतिहासिक हालात में वे वैसी रही हों।*"
(Santiago Carrilo, "Euro-Communism and The State", P. 149, अनुवाद हमारा, जोर मूल में)

इसी तरह इटली की 'कम्युनिस्ट' पार्टी घोषित करती है :

"गणतंत्रीय संविधान ने दिशा निर्धारित कर दिया है कि वह इटली को ऐसे रास्ते में ले जायेगा जो राजनीतिक जनवाद पर आधारित समाजवादी समाज में रूपांतरित करेगा।"
(La Politica e l' organizzazione dei comunisti italiani, Roma 1979, Page 3, Quoted From Euro Communism is anti-communism by Enver Hoxha, Page-39)

कुछ इसी तरह की घोषणा फ्रांसीसी 'कम्युनिस्ट' पार्टी करती है जो दे गालीय संविधान के दायरे में समाजवादी रूपान्तरण का सपना देखती है।

ये तीनों संशोधनवादी पार्टियां पूंजीवादी राज्य का निम्न पूंजीवादी दृष्टिकोण से विश्लेषण करती हैं। इनके अनुसार, पूंजीवादी जनवाद का वर्ग चरित्र अधिकाधिक गायब होता जा रहा है। वह पूंजीवादी जनवाद के भीतर पूंजीपति वर्ग के लिए जनवाद और व्यापक मेहनतकश आबादी के लिए तानाशाही नहीं रह गया है। वे सोचते हैं कि विकसित पूंजीवादी देशों में विशेषतौर पर पश्चिमी यूरोप के देशों में जनवाद का विस्तार हो गया है। उनका यह भी कहना है कि एकाधिकारी पूंजीपति वर्ग और बहुराष्ट्रीय कम्पनियां इस जनवाद को सीमित करने की प्रवृत्ति रखती हैं। वे फैसला लेने की ताकत को थोड़े से हाथों में केन्द्रित करने की अधिकाधिक कोशिश करती हैं। इसका टकराव, जनवाद, आजादी और रचनाशीलता के साथ अवश्यम्भावी है। इसलिए राजनीतिक क्षेत्र में भी स्वतंत्र मानव रचनाशीलता की आवश्यकता बनती है। स्वतंत्रता और जनवाद की आवश्यकता ने व्यापक राजनीतिक आयाम ग्रहण कर लिया है।

सान्तियागो कैरिलो अपनी पुस्तक 'यूरो-कम्युनिज्म' और राज्य में ग्राम्स्की के विचारधारात्मक यंत्र (apparatus) और दमनकारी यंत्र के रूप में राज्य की ताकत का हवाला देते हैं और कहते हैं कि राज्य के विचारधारा यंत्र के महत्व को कम करके नहीं आंकना चाहिए। उनके अनुसार राज्य के विचारधारात्मक यंत्र को अंशतः ही सही, प्रभावित किया जा सकता है। उनका कहना है कि विकसित पश्चिमी देशों के पूंजीवादी राज्यों के विचारधारात्मक यंत्र संकटग्रस्त हैं। इसमें सबसे बड़ा अनुदार और प्रतिक्रियावाद के मजबूत औजार के बतौर चर्च रहा है। वे चर्च को संकटग्रस्त बताते हैं। वे यूरो-कम्युनिस्टों द्वारा चर्च की सकारात्मक भूमिका को निभाने में आगे बढ़कर आकर उससे सहयोग की मांग करते हैं। वे इसे समाजवाद तक पहुंचने में आधुनिक क्रांतिकारी रणनीति का हिस्सा मानते हैं। कैरिलो का कहना है कि,

"यह एक समझदारी बनी है कि उत्पादन के साधनों, सामाजिक परिवर्तन और आमतौर से विज्ञान व संस्कृति की प्रगति ने भौतिक ढांचे और विचारधारात्मक अधिरचनाओं को व्यापक तौर पर बदल दिया है, कि यदि हिरावल सचेत है और तदनुरूप कार्य करता है, तो ये परिवर्तन उन्मुक्त कर रहे हैं तथा और ज्यादा शक्तिशाली क्रांतिकारी ताकतों को भी उन्मुक्त कर सकते हैं जिनको न तो मार्क्स, एंगेल्स और न ही लेनिन अपने समय में देख (count) सकते थे।"
(Santiago Carrilo, Euro Communism And The State, P-33, अनुवाद हमारा)

इसी प्रकार कैरिलो पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर राज्य के दूसरे विचारधारात्मक यंत्र शिक्षा प्रणाली की चर्चा करते हैं। वे कहते हैं कि विकसित पूंजीवादी देशों में शिक्षा सुविधासम्पन्न अभिजातों का विशेषाधिकार नहीं रह गया है। तकनीकी विकास के साथ शिक्षा आम हो गयी है। उत्पादन के साधनों के असाधारण विकास ने समाजवाद के पहले ही मानसिक और शारीरिक श्रम के अंतर को खत्म करने की प्रवृत्ति को वस्तुगत तौर पर सम्भव बना दिया है। हालांकि एकाधिकारियों की नीति

मजदूर वर्ग के कुशल और अकुशल हिस्सों के बीच विभाजन को कायम रखने की है। उनके अनुसार; इस समय उच्च शिक्षा के संस्थानों में संस्कृति की शक्तियां सचेत होने की ओर महान अग्रगामी छलांग लगाने की स्थिति में आ गयी हैं क्योंकि वर्तमान पूंजीवादी समाज में उनकी स्थिति बुनियादी तौर पर मजदूर वर्ग जैसी ही है। कैरिलो का कहना है कि ये विश्वविद्यालय व शिक्षा केन्द्र महज पूंजीवादी विचारधारा ही नहीं पैदा करते। वे पूंजीवादी समाज के विरोध के अक्सर ही केन्द्र बनते हैं। इन विश्वविद्यालयों और शिक्षा केन्द्रों में लाखों युवा लोग जाते हैं जिनमें से अधिकांशतः मध्यम व निम्न वर्ग के लोग होते हैं। वे जब विश्वविद्यालय छोड़ते हैं तो उनमें से अधिकांश श्रम बाजार में शामिल होते हैं और बेरोजगारी झेलते हैं। कैरिलो के अनुसार विश्वविद्यालयों में समाज के विचारधारात्मक यंत्र तैयार किये जा सकते हैं।

कैरिलो कानून और राजनीति क्षेत्र में विचाराधारात्मक यंत्र के संकट की चर्चा करते हैं। वे न्याय प्रणाली की चर्चा करते हुए कहते हैं कि मौजूदा राज्य के रूप और न्याय के बीच संघर्ष है। वे भविष्य में यह उम्मीद करते हैं कि अधिकाधिक नौजवानों द्वारा कानूनी पेशा अपनाने के बाद परम्परावादी पूंजीवादी न्यायप्रणाली का विरोध ज्यादा व्यापक होता जायेगा और जनवाद की ओर जाने की रफ्तार की परिघटना और तेज होती जायेगी।

वे राजनीतिक व्यवस्था को एक विचारधारात्मक यंत्र के बतौर एक या दूसरी हुकूमत की संवैधानिक विशिष्टताओं के अंतर को इतना महत्व नहीं देते जितना कि राजनीतिक पार्टियों, ट्रेड यूनियनों, सामाजिक आंदोलनों इत्यादि के इर्द-गिर्द राजनीतिक और सामाजिक शक्तियों के ढांचे को देते हैं, जिस पर विशेष हुकूमत निर्भर करती है और जो इसे सुरक्षा प्रदान करती हैं। वे पश्चिमी पूंजीवादी देशों में राजनीतिक संकट देखते हैं। वे पश्चिमी यूरोप में अमरीकी साम्राज्यवाद द्वारा दखलंदाजी को स्वीकार करते हैं। वे इससे यह नतीजा निकालते हैं कि राजनीतिक विचारधारात्मक यंत्र को यदि सही तरीके से इस्तेमाल किया जाय तो इजारेदार पूंजीपतियों और बहुराष्ट्रीय निगमों की अत्यल्प संख्या को छोड़कर व्यापक आबादी यूरो-कम्युनिस्टों के साथ ऐतिहासिक ब्लॉक का पक्ष ले लेगी।

वे राज्य के दमनकारी यंत्र की चर्चा करते हुए सेना और पुलिस के भीतर सत्ता और समाज के बीच टकराव की अभिव्यक्ति देखते हैं। वे इस बात की प्रवृत्ति देखते हैं कि अधिकारियों द्वारा उनका इस्तेमाल कई बार समाज के हितों के विरुद्ध होता है। इससे न सिर्फ सैनिकों में बल्कि अफसरों में भी असंतोष दिखाई पड़ता है। चूंकि राजसत्ता अधिकाधिक एकाधिकारी पूंजीपति वर्ग के स्वार्थ में सेना का इस्तेमाल करती है इसलिए सैनिकों व अफसरों में एकाधिकारी पूंजीपति वर्ग के विरुद्ध व्यापक जनता के साथ उनकी एकता बनती है। यही हाल नौकरशाही का है। और पुलिस के बारे में कैरिलो सलाह देते हैं कि उसका काम समाज-विरोधी तत्वों से समाज की रक्षा करना होना चाहिए। वे शासकों को यह सलाह देते हैं कि उन्हें प्रदर्शनों का आदी होना चाहिए और कि सुलह-समझौते से लोगों की जायज मांगों

को मान लेना चाहिए। अधिकारियों को अपने को समाज से ऊपर का नहीं समझना चाहिए। उनके अनुसार मालिकों को सीधे मजदूरों के साथ समझौता करना चाहिए। उनके विरुद्ध पुलिस का इस्तेमाल नहीं करना चाहिए।

इस तरीके से कैरिलो राज्य के विचारधारात्मक और दमनात्मक यंत्रों का अपने पक्ष में करने की रणनीति पेश करते हैं। वे इन्हें समाजवाद के जनवादी रास्ते पर लाने के लिए उपयोग में लाने की बात करते हैं। कैरिलो ये अच्छी तरह जानते हैं कि वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद विरोधी, वर्ग-संघर्ष विरोधी बात कह रहे हैं। इसलिए उन्हें लेनिन की पुस्तक 'राज्य और क्रांति' के विरोध में घुमा फिरा कर बोलना पड़ा। क्या कैरिलो को यह नहीं पता कि सभी संगठित धर्म प्रतिक्रियावाद की सेवा करते हैं। कैरिलो शिक्षा व्यवस्था के वर्ग-चरित्र को कैसे दिमाग से ओझल कर सकते हैं। वे यहां तक कि नौकरशाही, सेना और पुलिस के चरित्र को जनवादी करने में लगे हैं। क्या स्पेन का शासक वर्ग ऐसा करने देगा या कहीं का शासक वर्ग ऐसा करने देगा? क्या दुनिया में व्यापक परिवर्तन आ जाने से वैज्ञानिक व तकनीकी क्रांति के फलस्वरूप उत्पादक शक्तियों के व्यापक विस्तार से इजारेदारों और बहुराष्ट्रीय निगमों की सेवा करने वाले राज्य का चरित्र बदल जायेगा? एक तरफ कैरिलो यह कहते हैं कि पश्चिमी यूरोपीय देशों में अत्यल्प इजारेदार पूंजीपति वर्ग की राज्य सेवा करता है। दूसरी तरफ, वे इस इजारेदार पूंजीपति वर्ग की सेवा करने वाले राज्य से अधिकाधिक जनवाद की ओर जाने की उम्मीदें बांधे हुए हैं। मार्क्सवाद का क ख ग जानने वाला व्यक्ति यह अच्छी तरह से जानता है कि राज्य वर्ग उत्पीड़न का औजार है। जब तक पूंजीवादी राज्य है, तब तक मजदूर वर्ग और व्यापक मेहनतकश आबादी उसके जुए के नीचे पिसती रहेगी। सबसे अजीब बात यह है कि नौकरशाही, सेना और पुलिस किसी भी राज्य के असली खाने वाले दांत होते हैं। संसद और अन्य चुने हुए निकाय राज्य के दिखने वाले दांत होते हैं। कैरिलो यह उम्मीद करते हैं कि पूंजीवादी राज्य के असली खाने वाले दांत अपना रूपान्तरण कर लेंगे और जनतांत्रिक तरीके से समाजवाद ले आने में मदद करेंगे। कैरिलो स्पैनी मजदूर वर्ग को यह धोखा दे रहे हैं। कैरिलो की कुल बात का मतलब यह है कि क्रांति न की जाय। स्पैनी मजदूर वर्ग उस ऐतिहासिक ब्लॉक का पुछल्ला बन जाय जिसमें 'संस्कृति की शक्तियां' महत्वपूर्ण व नेतृत्वकारी भूमिका अदा करेंगी। संस्कृति की शक्तियों से उनका मतलब विभिन्न पेशों-यथा,डाक्टर, इंजीनियर, तकनीकी कर्मचारी और बुद्धिजीवियों से है। उनके दृष्टिकोण से कम्युनिस्ट पार्टी अब मजदूर वर्ग की पार्टी नहीं है बल्कि श्रम और संस्कृति की शक्तियों से मिलकर बनने वाली पार्टी है।

यूरो-कम्युनिस्ट इस बात का खण्डन करते हैं कि वे सामाजिक-जनवाद की ओर वापसी कर रहे हैं। यूरो-कम्युनिस्ट अपनी रणनीति बुर्जुआ जनवाद के नियमों पर केन्द्रित कर रहे हैं। इनके दृढ़ विश्वास के अनुसार, सार्वजनीन मताधिकार के जरिए ऐतिहासिक परिवर्तन लाना होगा। इसी आधार पर लोग इनकी तुलना द्वितीय इण्टरनेशनल के गद्दारों के चुनाववाद से करते हैं। इनका कहना है कि द्वितीय

इण्टरनेशनल के सूरमा पूंजीवादी व्यवस्था का प्रबंध देखते थे, जबकि यूरो-कम्युनिस्ट इसका ठीक उल्टा करना चाहते हैं। वे जनवादी तरीके से पूंजीवाद को पार करना चाहते हैं जिससे कि मानव द्वारा मानव का शोषण समाप्त हो सके और कम्युनिज्म की तरफ तेज गति से विकास करने के आधार के बतौर समाजवादी समाज का निर्माण हो सके।

III

यूरो कम्युनिस्टों का नये किस्म का समाजवाद

सांतियागो कैर्रिलो का कहना है :

> " जैसे कि सामंती हुकूमत के गर्भ से पूंजीवादी समाज का निर्माण हुआ था, वैसे ही विकसित पूंजीवादी समाज के गर्भ में समाजवादी समाज विकसित हो चुका है। यह आज हमें भौतिक आधार प्रदान करता है कि मौजूदा वर्ग समाज के विरुद्ध हम राज्य के विचारधारात्मक यंत्रों को अपने पक्ष में करने के कार्यभार में लग जायें।" (वही, P-48, अनुवाद हमारा)

यह बात पूर्णतया गलत है। सामंती समाज के गर्भ से पूंजीवादी समाज तो पैदा हो सकता था और वह हुआ भी। लेकिन चाहे कितना भी विकसित पूंजीवादी समाज हो, उसके गर्भ में समाजवादी समाज नहीं विकसित हो सकता। यह बुनियादी मार्क्सवादी प्रस्थापना है। पूंजीवादी समाज के भीतर वे भौतिक स्थितियां पैदा हो सकती हैं जो समाजवादी समाज के लिए संघर्ष को आगे बढ़ाने और अंततोगत्वा समाजवादी क्रांति करने में मजदूर वर्ग को सफल बनायें। इसका कारण यह है,

> " समाजवादी सम्बंध सार्वजनिक स्वामित्व पर आधारित उत्पादन सम्बंध होते हैं। उनका पूंजीवादी समाज के भीतर पैदा होना सम्भव नहीं। समाजवादी सार्वजनिक स्वामित्व प्रणाली का उस पूंजीवादी स्वामित्व प्रणाली से बुनियादी विरोध होता है जिसमें उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है। उत्पादन के साधनों की समाजवादी सार्वजनिक स्वामित्व प्रणाली लागू करने का मतलब है बुर्जुआ वर्ग के उत्पादन के साधनों का स्वत्वहरण। यह बुर्जुआ अधिनायकत्व वाले पूंजीवादी समाज के अंतर्गत नहीं किया जा सकता। बुर्जुआ राज्य मशीनरी और उसकी पूरी अधिरचना पूंजीवादी निजी स्वामित्व प्रणाली की रक्षा में लगी होती है। बुर्जुआ वर्ग कभी नहीं चाहता कि पूंजीवादी समाज के भीतर समाजवादी उत्पादन सम्बंध पैदा हों। नये और पुराने संशोधनवादियों द्वारा दी जाने वाली सारी की सारी गलत दलीलें कि "पूंजीवाद शांतिपूर्वक समाजवाद में तब्दील हो सकता है" पूरी तरह से तथ्य-विरोधी हैं। ये ऐसे सिद्धान्त हैं जो पूंजीवादी प्रणाली की सेवा करते हैं और सर्वहारा वर्ग को उठ खड़े होने एवं विद्रोह करने से मना करते हैं। लेकिन पूंजीवाद के विकास के साथ ही समाज के क्रांतिकारी रूपान्तरण का रास्ता साफ हो जाता है: " सर्वहारा वर्ग राज्य सत्ता पर कब्जा करता है और सबसे पहले उत्पादन के साधनों को राजकीय सम्पत्ति के रूप में तब्दील करता है।" (राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त, खण्ड दो, राहुल फाउण्डेशन, लखनऊ पृ-5)

चूंकि कैर्रिलो आधुनिक संशोधनवादियों में भी संशोधनवाद के बड़े झंडाबरदार हैं, वे समाजवादी रूपान्तरण के बारे में वही राग अलाप रहे हैं जो नये व पुराने संशोधनवादी अलापते रहे हैं। वे भी जनवादी तरीके से समाजवाद की ओर जाने का राग जारी रखे हुए हैं।

पूंजीवादी समाज के भीतर विकसित होने वाले कैर्रिलो के जनवादी समाजवाद का मॉडल यह है;

> " यह निश्चित तौर पर मामला है कि समाजवाद के लिए जनवादी रास्ता, जिसे हम क्लासिकीय मॉडल मान सकते हैं, से भिन्न आर्थिक रूपान्तरण की प्रक्रिया की पूर्वकल्पना करता है। कहने का मतलब है कि वह सार्वजनिक और निजी सम्पत्ति के रूपों के लम्बे समय तक सह-अस्तित्व की पूर्वकल्पना करता है। इस तरीके से यह हमारे कार्यक्रम में बताई गयी राजनीतिक और आर्थिक जनवाद की मंजिल अपना पूरा महत्व ग्रहण करता है। इस मंजिल में, जो अभी समाजवाद नहीं है, लेकिन जो एकाधिकारी पूंजी के वर्चस्व वाला राज्य भी नहीं रह गया है। यह आधुनिकतम सम्भव तरीके से पहले से तैयार उत्पादक शक्तियों और सामाजिक सेवाओं की हिफाजत करने का सवाल है। इस चरण में निजी उद्यम जो भूमिका अदा करते हैं, उनको स्वीकार करने का सवाल है।
>
> " इसी के साथ ही, मुख्य और कुछ मामलों में न सिर्फ प्रांत स्तर पर बल्कि राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय अधिकारियों के स्तर पर-अर्थव्यवस्था के निर्णायक उत्तोलकों का समाजीकरण है, जिससे कि संक्रमण काल में श्रम और संस्कृति की शक्तियों से निर्मित ऐतिहासिक ब्लॉक के प्रभुत्व की गारण्टी की जा सके।"
>
> (Santiago carrilo, Euro Communism And The State, P-77, अनुवाद हमारा)

कैर्रिलो न तो पूंजीवाद समाप्त करने की बात करते हैं और न ही सर्वहारा वर्ग द्वारा क्रांति के नेतृत्व की बात करते हैं। वे सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के सवाल से घोर नफरत करते हैं। कैर्रिलो की योजना में यहां सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के स्थान पर श्रम और संस्कृति की शक्तियों से निर्मित ऐतिहासिक ब्लॉक है। वे इसके प्रभुत्व की गारण्टी चाहते हैं। वे जुबानी तौर पर मार्क्सवाद की दुहाई देते हुए, इस बात को जानबूझकर नजरअंदाज करते हैं कि पूंजीवाद और कम्युनिज्म के बीच एक संक्रमण काल होगा जिसमें राज्य सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी

अधिनायकत्व के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता। मार्क्सवाद से विच्छेद करने के बाद कैरिंलो खुद स्पैनी पूंजीवाद के रक्षक के तौर पर सामने आ गये हैं।

क्योंकि समाजवाद की कल्पना बगैर पूंजीवादी राज्य मशीनरी को ध्वस्त किये नहीं की जा सकती और न ही इस राज्य मशीनरी को ध्वस्त करने के बाद सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के कायम किये बगैर समाजवाद की कल्पना की जा सकती।

अगर यह नहीं है तो सार्वजनिक क्षेत्र का चाहे कितना भी अधिक वर्चस्व हो, वह राज्य पूंजीवाद के सिवाय और कुछ नहीं हो सकता। दुनिया के तमाम पूंजीवादी देशों में सार्वजनिक क्षेत्र हैं। वे विशुद्ध रूप से पूंजीवादी उद्यम हैं। असल सवाल यह है कि राज्यसत्ता किस वर्ग के हाथ में है। कैरिंलो के समाजवादी मॉडल में पूंजी और श्रम के बीच के शोषणकारी रिश्तों को समाप्त करने की कोई बात नहीं है। उसका और अन्य यूरो कम्युनिस्टों का जनवादी समाजवाद और कुछ नहीं पूंजीवाद ही है। यह इससे अन्यथा हो भी नहीं सकता।

ख्रुश्चेवी संशोधनवाद ने 'व्यक्ति पूजा' के नाम पर स्टालिन पर कीचड़ उछाला। उसने सोवियत संघ की समाजवादी व्यवस्था को बदनाम किया। यह सब करके उसने सोवियत संघ में पूंजीवादी पुनर्स्थापना कर दी। यूरो कम्युनिस्टों ने ख्रुश्चेव से और आगे जाकर सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को ही नकार दिया। वे पूंजीवादी व्यवस्था के अंतर्गत सार्विक मताधिकार के गुणों का बखान करने लगे। वे इस बात को भूल गये कि पूंजीवाद के अंतर्गत सार्विक मताधिकार मजदूर वर्ग की परिपक्वता का पैमाना है। लेकिन मौजूदा राज्य के अंतर्गत यह इससे अधिक और कुछ नहीं है और कभी भी नहीं हो सकता। कैरिंलो सार्विक मताधिकार के बारे में कहते हैं कि सार्विक मताधिकार कोई रामबाण नहीं है। लेकिन इसी के साथ वह जोर देकर कहते हैं कि यूरोप में सार्विक मताधिकार के जरिये समाजवादी शक्तियां सरकार में आ सकती हैं और सत्ता पा सकती हैं तथा समाज में अपने लिए नेतृत्वकारी स्थिति कायम रख सकती हैं यदि वे समय-समय पर होने वाले चुनावों में जनता का विश्वास कायम रखने में समर्थ हों। यही कैरिंलो और अन्य यूरो कम्युनिस्टों का असली उद्देश्य है। मार्क्सवादी-लेनिनवादियों के लिए पूंजीवादी संसदों में चुनाव का प्रश्न हमेशा रणकौशलात्मक रहा है। वे क्रांतिकारी आंदोलन की जरूरत के मुताबिक इसमें हिस्सा ले सकते हैं या बहिष्कार कर सकते हैं। लेकिन वे हमेशा पूंजीवादी जनतंत्र और पूंजीवाद के पाखण्ड का पर्दाफाश करते हैं। वे पूंजीवादी व्यवस्था की मजदूरों व अन्य मेहनतकश तबकों के ऊपर तानाशाही की सच्चाई को उजागर करते हैं। वे पूंजीवादी पार्टियों के मजदूर विरोधी चरित्र को बेनकाब करते हैं। लेकिन यूरो कम्युनिस्ट इसे जनवादी रास्ते से समाजवाद तक पहुंचने का उपाय समझते थे। यह और कुछ नहीं मार्क्सवाद को परित्याग करने का और पूंजीवाद की सेवा करने का तरीका था।

कैरिंलो और अन्य यूरो-कम्युनिस्ट ख्रुश्चेवी संशोधनवाद द्वारा सोवियत संघ में पूंजीवादी पुनर्स्थापना करने और उसके सामाजिक साम्राज्यवाद में तब्दील होने की

परिघटना को कत्तई संज्ञान में नहीं लेते रहे थे। वे स्टालिन के जमाने के सोवियत संघ पर तो कालिख पोतते रहे थे। लेकिन सोवियत संघ में पूंजीवादी पुनर्स्थापना पर उनका कोई विश्लेषण नहीं था। यह अकारण नहीं था। कहावत है चोर-चोर मौसेरे भाई। यूरो-कम्युनिस्ट ख्रुश्चेव के नेतृत्व में और बाद में ब्रेझनेव के नेतृत्व में सोवियत राज्य को समाजवादी राज्य की संज्ञा देते थे। इसके विपरीत स्टालिनकालीन समाजवादी राज्य पर तरह-तरह के लांछन लगाते थे। वे इस तरीके से पूंजीवादी व्यवस्था की सेवा करने वाली अपनी नीति को जायज ठहराने की कोशिश करते थे। इसी आधार पर वे अमरीकी साम्राज्यवाद के छत्रछाया में बने नाटो संगठन में पश्चिमी यूरोप के देशों के बने रहने के पक्षधर थे। वे उस समय के यूरोपीय आर्थिक समुदाय में शामिल रहने के हिमायती थे। उनकी सारी घरेलू व वैदेशिक नीतियां मूलतः पूंजीवादी व्यवस्था के पक्ष में थीं। उन्होंने सोवियत संघ द्वारा चेकोस्लोवाकिया पर किये गये सैनिक हमलों का विरोध इस आधार पर किया था कि एक देश द्वारा दूसरे देश में हस्तक्षेप करने की बात उन्हें स्वीकार नहीं थी और इससे भी बढ़कर दुबचेक चेकोस्लोवाकिया में उन्हीं पूंजीवादी सुधारों की बात कर रहा था, जिसकी ये लोग कर रहे थे तथा उसके द्वारा सोवियत संघ के दायरे से चेकोस्लोवाकिया को बाहर लाने में इनके बहु केन्द्रवाद का रास्ता खुलता था।

देश के भीतर यूरो-कम्युनिस्ट पूंजीवाद की सेवा करने के लिए न सिर्फ सामाजिक-जनवादियों के साथ मेलमिलाप कर रहे थे बल्कि पूंजीपतियों की पार्टी क्रिश्चियन डेमोक्रेट और लिबरल के साथ गठजोड़ बनाने की हिमायती भी थे। ऐसी व्यवस्था को वे बहुलवादी तरीके से अपनी तथाकथित समाजवादी व्यवस्था को चलायेंगे, जिसमें पूंजीवादी पार्टियां भी होंगी, पूंजीपति भी होंगे, पूंजीवादी शोषण भी होगा, लेकिन उसे वे समाजवाद की संज्ञा देंगे। यह मजदूर वर्ग और मेहनतकश अवाम को ऐसा नकली समाजवाद थमाकर उन पर पूंजी के जुए को रखने की रणनीति थी।

IV
सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के बारे में

जैसा कि ऊपर बता चुके हैं कि यूरो-कम्युनिस्ट क्रांति द्वारा सत्ता दखल करने के अलावा जिस बात से सर्वाधिक घृणा करते थे वह है सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व का सवाल। समाजवादी क्रांति और सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व एक-दूसरे के साथ अभिन्न रूप से जुड़े हुए हैं। सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के प्रश्न के साथ कम्युनिज्म तक पहुंचने का रास्ता अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है क्योंकि सर्वहारा वर्ग ही वह वर्ग है जो समूचे समाज में अन्य वर्गों को मुक्त करने के बाद अपने को मुक्त कर सकता है। कैरिंलो और अन्य यूरो-कम्युनिस्ट इस बात से अच्छी

तरह वाकिफ थे। चूंकि उनका उद्देश्य पूंजीवादी व्यवस्था की सेवा करने में मजदूर वर्ग और मेहनतकश अवाम की आंखों में धूल झोंकना था, इसलिए वे इस प्रश्न के बारे में अर्द्ध-सत्यों और गलत बयानियों का सहारा लेते थे।

कैरिलो के अनुसार :

> "अधिनायकत्व शब्दावली वर्तमान शताब्दी के दौरान खुद व खुद घृणित हो गयी है, जिसने सबसे घृणित फासिस्ट व प्रतिक्रियावादी तानाशाहियां देखी हैं, उसमें फ्रांको की तानाशाही एक है, और स्टालिनवाद के अपराधों को जाना है, कहने का मतलब यह है कि सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के भ्रष्ट होने से पैदा होने वाली परिघटना है- और एक या दूसरे किस्म के सर्वसत्तावाद की बुराइयां है। " (वही, पृ. 141, अनुवाद हमारा)

कैरिलो सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व और पूंजीवादी जनवाद के अंतर्गत पूंजीवादी अधिनायकत्व की तुलना नहीं करते। वे 'स्टालिनवाद के अपराधों' पर कीचड़ उछालकर सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को खारिज करते थे। जब पूंजीवाद के अंतर्गत फासिस्टों की बात आती है तो इसे वह फासिस्ट गुट की तानाशाही बताकर पूंजीवादी जनवाद के गुणगान करने लगते हैं। दरअसल, सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व मार्क्सवादी विश्वदृष्टिकोण का प्रश्न है। इसके परित्याग करने का मतलब मार्क्सवादी विश्वदृष्टिकोण का परित्याग करना है। इसके अंतर्गत आर्थिक, राजनीतिक और दार्शनिक घटक समाये हुए हैं। आर्थिक तौर पर, यह इस तथ्य को मान्यता देता है कि अन्य सामाजिक रूपान्तरणों से अलग समाजवादी उत्पादन सम्बंध पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर से नहीं पैदा हो सकते; इसलिए समाजवादी रूपान्तरण पूंजीवाद-विरोधी समाजवादी क्रांति से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई है। राजनीतिक तौर पर यह अवधारणा यह प्रदर्शित करती है कि पूंजीवादी राज्य अल्पसंख्यक शोषक वर्गों के हितों की हिफाजत करता है और शोषित बहुसंख्यकों के उत्पीड़न का औजार है, अतः इसको तोड़कर एक नयी राज मशीनरी का गठन जरूरी है जो शोषक अल्पसंख्यकों का दमन करेगी और बहुसंख्यक शोषितों के हितों की रक्षा करेगी। दार्शनिक तौर पर इसका मतलब है कि यह मानव इतिहास में महानतम गुणात्मक छलांग की शुरुआत है। इसमें पहली बार वह सही अर्थों में मानव बनता है। इस शुरूआत की अंत तक ले जाने के दौरान ऐसी स्थिति पैदा होगी जहां मानव आवश्यकता के राज से स्वतंत्रता के राज में पहुंच जायेगा।

इस सच्चाई को समझते हुए और ख्रुश्चेवी संशोधनवाद के विरुद्ध संघर्ष के दौरान माओत्से तुंग ने समाजवादी समाज में सर्वहारा वर्ग के चौतरफा अधिनायकत्व को मजबूत करने की हिमायत की। उन्होंने समाजवादी समाज के दीर्घकालीन संक्रमणकालीन चरित्र को समझ कर उसके अंतर्गत वर्ग, वर्ग-अंतरविरोधों और वर्ग-संघर्ष की मौजूदगी का विश्लेषण करते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि अभी यह तय नहीं हुआ है कि चीन में पूंजीवाद विजयी होगा कि समाजवाद। इसको तय होने में लम्बा समय लगेगा। उन्होंने न सिर्फ पुराने समाज के शोषक वर्गों बल्कि चीन के

समाजवादी समाज में पैदा होने वाले नये पूंजीपतियों को चिन्हित किया और उसके विरुद्ध संघर्ष करने तथा उन्हें पराजित करने का आह्वान किया। इसके लिए उन्होंने महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रांति के रूप में एक ऐसा हथियार दिया जिससे समाजवादी समाज में पूंजीवादी पुनर्स्थापना होने का रास्ता रूक सकता था। उन्होंने यह बताया कि सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व ही वह हथियार है जिसके जरिये चीनी मजदूर वर्ग समूची चीन की मेहनतकश जनता को कम्युनिज्म तक ले जा सकता है। तभी वह आवश्यकता के राज्य से उठकर स्वतंत्रता के राज्य में पहुंच सकेगी। उन्होंने बार-बार जोर दिया कि वर्ग-संघर्ष कुंजी है और इसको आगे बढ़ा कर ही कम्युनिज्म के दुश्मनों-दैत्यों और दानवों-को नेस्तनाबूद किया जा सकता है। इसके लिए कई सांस्कृतिक क्रांतियां करनी होगी।

लेकिन यूरो-कम्युनिस्टों को न तो समाजवाद लाना है और न ही उन्हें कम्युनिज्म तक की यात्रा करनी है। इसलिए वे क्रांति और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के विरोधी हैं। यदि वे सचमुच में स्टालिन द्वारा की गयी गलतियों या स्टालिनकालीन गलतियों और विच्युतियों से चिंतित होते तो वे सोवियत संघ में समाजवाद की समस्याओं और अंतर-विरोधों का अध्ययन करते, उनकी जड़ें सोवियत समाज में देखते। तब वह मार्क्सवादी विश्वदृष्टिकोणों को परित्याग करने की ओर नहीं जाते। लेकिन उन्हें यह नहीं करना था। उन्हें स्टालिन पर कीचड़ उछालने के साथ-साथ सोवियत संघ की उस समय की समाजवादी व्यवस्था को बदनाम करना था क्योंकि उन्हें क्रांति के रास्ते को छोड़कर पूंजीवादी व्यवस्था की सेवा करने की ओर जाना था। इसलिए क्रांति और सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व के प्रश्न पर वे इतनी घृणा प्रदर्शित करते हैं।

V

यूरो-कम्युनिज्म : सांगठनिक उसूल

यूरो-कम्युनिज्म को स्वीकार करने वाली पार्टियों ने जब शांतिपूर्ण तरीके से पूंजीवादी समाज का समाजवादी रूपान्तरण करने का सिद्धान्त स्वीकार कर लिया तब उनको ऐसी पार्टी की जरूरत नहीं रह गयी थी जो समाज के क्रांतिकारी रूपान्तरण के लिए आवश्यक होती है। अब यूरो कम्युनिस्ट पार्टियों की भूमिका एक हिरावल पार्टी के बतौर नहीं बल्कि एक जन-पार्टी के बतौर स्वीकार करना ही था। यदि वर्ग-दुश्मन के विरुद्ध क्रांति नहीं करनी है तो एक क्रांतिकारी मार्क्सवादी-लेनिनवादी पार्टी की जरूरत ही नहीं रह जाती। संशोधनवादी पार्टी लेनिनवादी उसूलों पर चलने वाली पार्टी हो ही नहीं सकती। यूरो-कम्युनिस्ट और अन्य किस्म के संशोधनवादियों में मूल फर्क यह हो जाता है कि यूरो-कम्युनिस्ट बहुत बेशर्मी के साथ यह घोषित करते हैं कि वे कम्युनिस्ट पार्टी के लेनिनवादी उसूलों को अस्वीकार करते हैं। वे कम्युनिस्ट

पार्टी की हिरावल पार्टी की परिभाषा को बदलकर ऐसा कर चुके हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी और जन संगठनों मसलन मजदूर संगठनों के बीच वास्तव में अंतर समाप्त हो जाता है। लेनिनवादी धारणा के अनुसार, पार्टी और व्यापक जनता के बीच एकता ट्रेड यूनियनों और अन्य तरह के तमाम जन-संगठनों के सम्प्रेषण पट्टियों के जरिए स्थापित होती है। इस धारणा में पार्टी जन-संगठनों का महज गणितीय योग नहीं होती बल्कि वह इससे भी ज्यादा होती है। कम्युनिस्ट पार्टी क्रांति का निदेशक केन्द्र होती है।

लेकिन संशोधनवादियों के लिए कम्युनिस्ट पार्टी की भूमिका एक जनसंगठन की तरह रह जाती है। वे कम्युनिस्ट पार्टी और जन-संगठन को एक समान नजर से देखते हैं। द्वितीय विश्व-युद्ध के बाद पनपे संशोधनवाद में सबसे पहले संयुक्त राज्य अमरीका की कम्युनिस्ट पार्टी का नेता अर्ल ब्राउडर था, जिसने वहां की कम्युनिस्ट पार्टी को भंग करने की सलाह दी थी और वस्तुतः उसे भंग भी कर दिया था। बाद में गद्दार टीटो गुट ने पार्टी की भूमिका को कम करने का प्रयास किया। सोवियत संघ के संशोधनवादियों ने "समूची जनता की पार्टी" और "समूची जनता के राज्य" की अवधारणा पेश की थी। लेकिन सिद्धान्त में वे लेनिनवादी अवधारणा वाली पार्टी की ही बातें करते रहे थे। यूरो-कम्युनिज्म मानने वाली पार्टियों ने खुलेआम पार्टी की नेतृत्वकारी हिरावल भूमिका को अस्वीकार किया है। वे यहां तक कहते हैं कि कम्युनिस्ट पार्टी का मजदूर वर्ग और अन्य मेहनतकश तबकों के हितों को प्रतिनिधित्व करने की कोई इजारेदारी नहीं है। दरअसल, उन्हें अब कम्युनिस्ट पार्टी की जरूरत ही नहीं रह गयी है। इसलिए उनका जोर अन्य राजनीतिक पार्टियों के साथ राजनीतिक संयुक्त मोर्चों की ओर ज्यादा केन्द्रित है। वे इन्हीं रणनीतिक गठबंधनों को ही मुख्य वाहक मानते हैं। इसी के साथ ही, वे ट्रेड यूनियनों को पार्टी प्रभावों व नियंत्रणों से मुक्ति के नाम पर इनके सदस्यों के कम्युनिस्ट रूपान्तरण के कठिन काम को त्याग देने की ओर गये हैं। यूरो-कम्युनिज्म की पार्टियां अब पूंजीवादी सरकारों की तारीफ करने और उनके मजदूर-मेहनतकश विरोधी कदमों में भी सकारात्मक देखने लगी हैं। इनका दावा था कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की अवधारणा के मुताबिक काम करने वाली कम्युनिस्ट पार्टियां महज नकारात्मक और कभी-कभी सर्वनकारवादी आलोचना करती थीं, वे इसे बदलकर उनको सकारात्मक तरीके से पेश करेंगी। क्योंकि, उनके अनुसार, समाज और व्यवस्था में सब कुछ नकारात्मक नहीं है। वे पार्टी की इकाइयों और सेलों की बैठकों में गैर-पार्टी सदस्यों को भाग लेने के लिए खुले तौर पर आमंत्रित करते हैं। इन पार्टियों ने अपने सदस्यों के कलात्मक और सांस्कृतिक रुझानों, उनके दार्शनिक व सौन्दर्यशास्त्रीय दृष्टिकोणों पर अधिकाधिक उदासीनता का रुख अपनाया है। इस बात पर विशेष जोर दिया जाता है कि पार्टी अपने सदस्यों के निजी जीवन में किसी भी तरह हस्तक्षेप न करे।

कम्युनिस्ट पार्टी की लेनिनवादी धारणा के मुताबिक कम्युनिस्ट पार्टी वर्ग-संघर्ष को संचालित करने वाली एक ऐसी पार्टी है जो कम्युनिज्म तक पहुंचने

का औजार है। अतः इसके सदस्यों को नये किस्म के मानव बनने के लिए जद्दोजहद करना चाहिए। कोई भी कम्युनिस्ट पार्टी अपने सदस्यों के भीतर मौजूद विजातीय विचारों के विरुद्ध संघर्ष करके उन्हें सर्वहारा वर्ग के दृष्टिकोण पर खड़ा करती है। वह कला, संस्कृति, दर्शन और सौन्दर्यशास्त्र के प्रश्नों को वर्ग-दृष्टिकोण से देखती है और इन सभी क्षेत्रों में सर्वहारा वर्ग के वर्ग दृष्टिकोण को स्थापित करती है। वह इन प्रश्नों पर वर्गोपरि या वर्गेतर नजरिया नहीं अपनाती। इसी प्रकार, वह अपने सदस्यों के निजी जीवन को उसके सामाजिक व्यवहार से एकदम अलग करके नहीं देखती। नये किस्म के मानव, सर्वहारा वर्ग के वर्ग दृष्टिकोण के मानव, कम्युनिस्ट मानव, विजातीय विचारों के विरुद्ध संघर्ष करके ही निर्मित हो सकते हैं।

लेकिन यूरो-कम्युनिज्म को अब नये मानव, कम्युनिस्ट मानव की जरूरत नहीं है। इसलिए विचारधारात्मक संघर्ष को सर्वहारा वर्ग के दृष्टिकोण से चलाने की जरूरत नहीं है। अतः किसी भी पूंजीवादी पार्टी की तरह वे सदस्यों के गैर-सर्वहारा दृष्टिकोण के विरुद्ध संघर्ष को फालतू का संघर्ष मानते हैं।

यूरो-कम्युनिस्ट पार्टियों ने अब कार्यकर्ता आधारित पार्टी के स्थान पर जन-पार्टी बनाने की जरूरत पर जोर दिया है। उन्हें अब पेशेवर क्रांतिकारियों की पार्टी की जरूरत नहीं रह गयी है। वे इसके दरवाजे सभी के लिए खोल चुके हैं। पहले जो समर्थक श्रेणियों में लोग थे, वे अब नये सदस्यों के मुख्य स्रोत हो गये हैं। नये सदस्यों की भर्ती में इनको ठीक उच्चतर कमेटी की स्वीकृति जरूरी नहीं है। इन्हें अब उम्मीदवारी के काल की भी जरूरत नहीं है। अब पार्टी को वोट देने वाले और उसकी कुछ गतिविधियों में हिस्सा लेने वाले लोग पार्टी सदस्य हो सकते हैं। अब पार्टी के सदस्यों के लिए दरवाजे सबके लिए खोल दिये गये हैं। बस शर्त यही है कि पार्टी कार्यक्रम को स्वीकार करता हो। चाहे उसका दार्शनिक या धार्मिक दृष्टिकोण कुछ भी हो।

यूरो-कम्युनिज्म की पार्टियों ने लेनिनवादी जनवादी केन्द्रीयता के सिद्धान्त की व्याख्या में तोड़-मरोड़ किया है। वे जनवादी केन्द्रीयता के तहत जनवाद की ज्यादा वकालत करते हैं। इसी प्रकार, विचारधारा के प्रश्न पर वे मार्क्सवाद-लेनिनवाद को अपना पथ-प्रदर्शक सिद्धान्त नहीं मानते। वे मार्क्सवाद को अपनी विचारधारात्मक प्रेरणा के बतौर और अपने विश्व दृष्टिकोण के आधार के बतौर मानते हैं। लेकिन इसके साथ ही वे दूसरे प्रभावों की सम्भावना को भी स्वीकार करते हैं।

इटली की कम्युनिस्ट पार्टी की आधिकारिक अवस्थिति यह है:

> " कम्युनिस्ट पार्टी उन विचारों और संस्कृति की परम्परा को मॉडल के बतौर लेती है जो बुनियादी मार्क्सवादी प्रेरणा से शुरू होकर इटालवी और विश्व संस्कृति की जीवंत धाराओं के साथ दीर्घकालिक और फलदायी सम्पर्क द्वारा इसके इतिहास के दौरान सृजित हुई है। हम पहले से यह कह चुके हैं कि "मार्क्सवाद-लेनिनवाद" का सूत्र हमारी सैद्धान्तिक व विचारधारात्मक विरासत की समग्र समृद्धि को प्रतिबिम्बित

नहीं करता।" (Thesis For The V Congress of the PCI, Thesis No. 15 Quoted From Branko Pribicevic Archive, www. Marxist org (अनुवाद हमारा)

अब पार्टी समाजवादी प्रेरणा के लिए ईसाई दृष्टिकोण को एक महत्वपूर्ण स्रोत मानती है।

लेनिन ने "क्या करें?" और "एक कदम आगे, दो कदम पीछे" में जिस तरह की बोल्शेविक पार्टी के गठन के लिए संघर्ष किया था और वस्तुतः इसी आधार पर ऐसी फौलादी बोल्शेविक पार्टी अस्तित्व में आयी थी जिसने अक्टूबर समाजवादी क्रांति सम्पन्न किया था। लौह अनुशासन में संगठित जनवादी केन्द्रीयता के सांगठनिक उसूलों पर दृढ़ता से चलने वाली पेशेवर क्रांतिकारियों की कोर से बनी बोल्शेविक पार्टी के बिना अक्टूबर समाजवादी क्रांति की कल्पना ही नहीं की जा सकती थी। लेनिन पार्टी कार्यकर्ताओं और नेताओं में जरा भी सर्वहारा वर्ग के विश्वदृष्टिकोण से विचलनों और भटकावों को कत्तई बर्दाश्त करने के पक्ष में नहीं थे। वे दार्शनिक प्रश्नों सहित राजनीति, कला, साहित्य इत्यादि सभी क्षेत्रों में मार्क्सवादी दृष्टिकोण से, सर्वहारा वर्ग की मुक्ति के दर्शन के दृष्टिकोण से सतत संघर्षरत थे। 1905 की असफल रूसी क्रांति ने जब कुछ बोल्शेविकों को पराजयवाद का शिकार बना दिया था और वे मार्क्सवाद पर दार्शनिक प्रहार करने लगे थे तो लेनिन ने मार्क्सवादी द्वंद्वात्मक -ऐतिहासिक भौतिकवादी दृष्टिकोण की हिफाजत करते हुए ऐसे लोगों की बखिया उधेड़ते हुए "मार्क्सवाद और अनुभव सिद्ध आलोचना" नाम की महत्वपूर्ण रचना लिखी थी। लेनिन ने बोल्शेविक पार्टी को विशुद्ध सर्वहारा वर्ग की विचारधारा, मार्क्सवादी विचारधारा के आधार पर संगठित किया था। इसी ताकत के बल पर वे यह दावा कर सकते थे कि कुछ हजार पार्टी कार्यकर्ताओं के बल पर रूस में क्रांति सम्पन्न कर सकते हैं। यह दावा, पेशेवर क्रांतिकारियों को केन्द्र में रखने वाली पार्टी की धारणा ही कर सकती थी। दरअसल, बोल्शेविक पार्टी ऐसी ही पार्टी थी, जिसके ईर्द-गिर्द रूस के सचेत मजदूरों का अस्सी प्रतिशत से ज्यादा हिस्सा मजबूती से खड़ा था और इस अस्सी फीसदी सचेत मजदूरों ने व्यापक मजदूर-मेहनतकश आबादी को लामबंद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी थी।

VI
इन पार्टियों का उत्थान और पतन

द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान यूरोप में फासिज्म विरोधी युद्ध की फिजा थी। उस समय इस युद्ध को लोकप्रिय क्रांति में बदलने के अनेक सकारात्मक कारक मौजूद थे और वे दिन-ब-दिन उभर रहे थे। फासिज्म ने अधिकृत देशों की राष्ट्रीय स्वाधीनता को समाप्त कर दिया था। उसने तमाम किस्म की नागरिक आजादी को

समाप्त कर दिया था। वह पूंजीवादी जनवाद को भी दफना चुका था। फासिज्म के विरुद्ध युद्ध अधिकृत देशों में राष्ट्रीय मुक्ति युद्ध तो होना ही था, इसके साथ ही उसे जनवाद की रक्षा और उसके विस्तार के लिए भी होना था।

मध्य और दक्षिण-पूर्वी यूरोप के देशों की कम्युनिस्ट पार्टियां यह जानती थीं कि स्वाधीनता और जनवाद के संघर्ष के साथ कैसे जोड़ा जाय। उन्होंने ऐसी नीतियां तय और लागू की, जो इन समाजों को जनता के जनवाद तक ले गयीं।

इसी दौर में, पश्चिमी यूरोप की कम्युनिस्ट पार्टियां द्वितीय विश्वयुद्ध द्वारा और फासिज्म से उपजी अनुकूल परिस्थितियों को इस्तेमाल करने मे समर्थ सिद्ध नहीं हुई। यह इस बात को प्रदर्शित करता है कि उन्होंने कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस के निर्देशों को ठीक से नहीं समझा और उन्हें लागू नहीं किया। इस कांग्रेस ने निर्देश दिया था कि फासिज्म का विरोध और उसके विरुद्ध लड़ाई के दौरान, कुछ निश्चित स्थितियों में, संयुक्त मोर्चा सरकारों की परिस्थितियां पैदा होंगी। ये सरकारें सामाजिक-जनवादी सरकारों से नितांत रूप से भिन्न होंगी। इन्हें फासिज्म के विरुद्ध लड़ाई से रूपान्तरित होकर जनवाद और समाजवाद के लिए संघर्ष की मंजिल में जाना होगा। फ्रांस और इटली में, फासिज्म के विरुद्ध युद्ध ऐसी सरकारों के गठन की ओर नहीं ले गया, जैसा कि कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल चाहता था। युद्ध के बाद, पूंजीवादी किस्म की सरकारें सत्ता में आयी। कम्युनिस्टों द्वारा इनमें हिस्सेदारी करने से इनके सरकारों के चरित्र में बदलाव नहीं हुआ। यहां तक कि, फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी, जो द्वितीय विश्वयुद्ध के अंत तक आमतौर पर सही लाइन पर थी, कुछ समस्याओं पर अपनी गलतियां, कमजोरियां और भटकावों को दूर व दुरुस्त करने में असमर्थ थी। अन्य कारणों के अलावा ये आंतरिक व बाह्य परिस्थितियों का वस्तुगत विश्लेषण ठीक से नहीं कर सकीं।

फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ने फ्रांस में लोक प्रिय मोर्चा (Popular Front) के गठन में मुख्य भूमिका निभायी। इसने, 1935 में अपनी नान्तेज कांग्रेस में लोकप्रिय मोर्चे का नारा दिया। यह ऐसा नारा था जिसने व्यापक फ्रांसीसी जन समुदाय के बीच अपनी प्रतिध्वनि पायी। कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल ने लोकप्रिय मोर्चे के गठन के लिए फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी के प्रयासों और कार्यों की प्रशंसा की थी। फिर भी, यह कहना होगा कि यह पार्टी मजदूर वर्ग के पक्ष में परिस्थितियों का फायदा उठाने और उसका इस्तेमाल करने में असमर्थ सिद्ध हुई।

आंतरिक और बाह्य फासिज्म से फ्रांस पर पड़ने वाले खतरे के बारे में कम्युनिस्ट पार्टी खुले आम बोली और इस खतरे की निंदा की तथा प्रदर्शनों के जरिये सड़कों पर उतर पड़ी। लेकिन उसने फासिज्म के विरुद्ध कदम उठाने के लिए और प्रत्येक बात के लिए "कानूनी सरकारों" से, पूंजीवादी सरकारों से उम्मीद की। ये सरकारें पूंजीवादी संसद में गठजोड़ से बनी थीं। लोकप्रिय मोर्चा के गठन के समय फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी की सफलता स्पष्ट थी। उस समय की जटिल परिस्थितियों में इसने फ्रांस में फासिस्ट सरकार के गठन का रास्ता रोक दिया था। मजदूर वर्ग के

पक्ष में कुछ कदम उठाने के बावजूद ब्लम सरकार ने अपनी घरेलू और विदेश नीति में लोकप्रिय मोर्चे के कार्यक्रम का उल्लंघन किया और उसके साथ विश्वासघात किया। कम्युनिस्ट पार्टी लोकप्रिय मोर्चा सरकार में शामिल नहीं थी। वह उसे संसद के भीतर समर्थन दे रही थी। वह इस प्रक्रिया को रोकने में असमर्थ थी। पहले यह जन-संघर्षों, हड़तालों और प्रदर्शनों में लगी हुई थी, अब उसके स्थान पर प्रधानमंत्री ब्लम के साथ उनके घर में थोरे और डुक्लोज की साप्ताहिक बैठकें होने लगीं।

लोकप्रिय सरकार का नेता समाजवादी था और सरकार में बड़ी संख्या में समाजवादी थे। लेकिन सरकारी मशीनरी जस की तस बनी रही। सेना राजनीतिक तौर पर निरपेक्ष थी। इसका नेतृत्व तमाम पूर्ववर्ती सरकारों की तरह उन प्रतिक्रियावादी अफसरों के हाथ में बना रहा जिनको फ्रांसीसी अवाम को कुचलने तथा उपनिवेशों पर कब्जा करने के उद्देश्य से प्रशिक्षित किया गया था। उन्हें फासिज्म और प्रतिक्रियावाद से लड़ने के लिए प्रशिक्षित नहीं किया गया था।

फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी कार्यवाहियों को अंत तक अंजाम नहीं दिया। यह फासिज्म और प्रतिक्रियावाद के विरुद्ध वास्तविक संघर्ष के लिए संगठित नहीं थी। प्रचार और उद्वेलन, प्रदर्शन और हड़तालें, जिनका इसने नेतृत्व किया, वे पूंजीपति वर्ग के हाथ से सत्ता छीन लेने की लाइन पर नहीं थे। यह बात सही है कि इसने मार्क्सवाद-लेनिनवाद के बुनियादी सिद्धान्तों से इंकार नहीं किया, फिर भी पार्टी की गतिविधियां और संघर्ष अनचाहे और अचेत तौर पर सुधार के लिए संघर्ष के चरित्र का, ट्रेड यूनियन स्तर पर आर्थिक मांगों के चरित्र का रूप ग्रहण कर लिया।

जब स्पेन में युद्ध छिड़ गया तब फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ने फ्रांको के विरुद्ध युद्ध में स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी और स्पैनी जनता की उद्वेलन व प्रचार तथा भौतिक सहायता के साथ पूरी मदद की। इसने स्पेन जाकर लड़ने के लिए स्वयंसेवकों का आह्वान किया। इस आह्वान से हजारों पार्टी सदस्य तथा अन्य फासिस्ट-विरोधी फ्रांसीसी स्पेन गये तथा उनमें से तीन हजार लोग स्पैनी धरती पर शहीद हो गये। पार्टी के मुख्य कार्यकर्ताओं ने या तो सीधे तौर पर युद्ध में भाग लिया था या विभिन्न मौकों पर स्पेन गये थे। स्पेन में अंतर्राष्ट्रीय ब्रिगेड में शामिल होने के लिए अनेक देशों के अधिकांश फ्रांस के रास्ते जाते थे। फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी उनके रास्ते का इंतजाम करती थी।

स्पैनी युद्ध के दौरान फ्रांस के कम्युनिस्ट और मजदूर वर्ग ने लड़ाई के नये अनुभव हासिल किये और ये अनुभव फ्रांसीसी सर्वहारा वर्ग के क्रांतिकारी संघर्षों की पुरानी परम्परा से जुड़ गये। फ्रांको प्रतिक्रियावाद, इटली के फासिस्ट और जर्मन नाजियों के साथ-साथ फ्रांसीसी व दुनिया के प्रतिक्रियावादियों के विरुद्ध संगठित आमने-सामने की वर्ग-लड़ाइयों में हासिल क्रांतिकारी अनुभव एक बड़ी पूंजी थी। यह क्रांतिकारी पूंजी द्वितीय विश्वयुद्ध के संकट पूर्ण क्षणों में और फ्रांस पर कब्जे के समय पार्टी की सेवा कर सकती थी। लेकिन वास्तविकता में इसका इस्तेमाल नहीं किया गया।

फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ने म्यूनिख की नीति का पर्दाफाश किया जिसमें दलादियेर और बोनेट्स ने हिटलर को रियायतें देकर चेकोस्लोवाकिया की जनता के हितों को बेच दिया और हिटलर की युद्धमशीन को सोवियत संघ के विरुद्ध मोड़ दिया। इसने जर्मन कब्जाकारियों और उनके सहयोगी विची के विरुद्ध लड़ाई में प्रतिरोध करने तथा बहादुरी के साथ खड़ा होने के लिए फ्रांसीसी जनता का आह्वान किया। यह संघर्ष, जिसकी शुरुआत कार्यवाहियों, हड़तालों, प्रदर्शनों और तोड़-फोड़ के साथ हुई, तेजी के साथ फैल गया। फ्रांसीसी छापामार शक्तियों को कम्युनिस्ट पार्टी ने खड़ा किया। यही एक मात्र टुकड़ी थी, जो कब्जाकारियों के विरुद्ध लड़ी थी। दे गालवादी ताकतें महज गुप्तचर सेवायें थीं जो मित्र शक्तियों के लिए उपयोगी सूचनायें उपलब्ध कराती थीं। जहां दे गालवादी ताकतें मित्र शक्तियों के उतरने का महज इंतजार कर रही थीं वहीं कम्युनिस्ट पार्टी देश की मुक्ति के लिए वीरतापूर्वक लड़ रही थी।

मुक्ति युद्ध में फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ने कब्जाकारियों के विरुद्ध प्रतिरोध युद्ध संगठित किया और उसे विकसित किया। फिर भी, जैसा कि घटनायें बताती हैं कि इसने सत्ता पर कब्जा करने के बारे में विचार नहीं किया और न ही इसकी योजना बनायी।

यह इस तथ्य से जाहिर हो जाता है कि युद्ध के दौरान पार्टी ने राष्ट्रीय मुक्ति के लिए अनेक कमेटियों का गठन किया था। लेकिन पार्टी ने उन पर ध्यान नहीं दिया और यह सुनिश्चित करने के लिए कदम नहीं उठाये कि ये कमेटियां नयी राज्यसत्ता के नाभिक के बतौर अपने को स्थापित करें। शुरू से अंत तक छापामार टुकड़ियां छोटी बनी रहीं तथा वे एक-दूसरे से बिना आवयविक जुड़ाव के थीं। किसी भी समय पार्टी ने वास्तविक राष्ट्रीय मुक्ति सेना के बड़े संगठन के गठन के सवाल को नहीं उठाया।

जब फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी यह सब कर रही थी, उस समय फ्रांस का पूंजीपति वर्ग सत्ता पर कब्जा करने की अपनी तैयारियां कर रहा था। उसे यह काम उस समय करना था जब आंग्ल-अमरीकी सेना फ्रांस की धरती पर उतर चुकी हों। दे गाल ने लंदन में राष्ट्रीय कमेटी का गठन किया था। बाद में वह अल्गीयर्स की सरकार के पास समर्थन के लिए चला गया। जब जर्मनी की नाव डूबने को थी तब दे गाल पुरानी सेना के जनरलों को लेकर कूद पड़ा। पूंजीपति वर्ग इसके लिए पहले से ही तैयारी किये हुए था।

यह एक ऐसी खतरनाक परिस्थिति थी, जिसका फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी ठीक से आकलन नहीं कर सकी और न ही पूरे तौर पर इसका ठीक से विश्लेषण कर सकी। यह मित्र शक्तियों के फ्रांसीसी जमीन पर उतरने से पैदा होने वाली जटिलताओं से डर गयी। यह दे गाल और उसके इर्द गिर्द इकट्ठा शक्तियों से डर गयी। इस तरह यह गृह युद्ध से और विशेष तौर पर आंग्ल-अमरीकी फौजों के विरुद्ध युद्ध से डर गयी।

कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व ने अपनी फासिस्ट विरोधी मुहिम को आगे बढ़ाने में हिचकिचाहट दिखायी और वह कमजोर सिद्ध हुई।

इटली में फासिस्ट विरोधी युद्ध की अपनी विशिष्टतायें और लक्षण थे लेकिन इटली की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने सामने जो लक्ष्य निर्धारित किये थे, इसने जो बुलमनपन दिखाया व रियायतें दीं, वे फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी जैसी ही थी।

द्वितीय विश्वयुद्ध की शुरुआत से ही इटली की कम्युनिस्ट पार्टी के अधिकांश नेतृत्वकारी कार्यकर्ता फ्रांस में थे। लगभग उनमें सभी पुलिस के हाथों धरे गये। इनमें पार्टी के महासचिव पालमीरो तोगिलीयाती भी थे जो जेल से रिहा होते ही, मार्च, 1941 में सोवियत संघ चले गये।

हालांकि, इटली की कम्युनिस्ट पार्टी ने फासिस्ट ताकतों द्वारा छेड़े गये आक्रामक युद्ध के प्रति सही रुख अपनाया और इसकी लूट-खसोट के साम्राज्यवादी युद्ध के बतौर निंदा की। तब भी, इसकी गतिविधियां सीमित थीं। इस पार्टी के सारे प्रयास निर्वासित फासिस्ट विरोधी पार्टियों के साथ मोर्चे के गठन तक और अनेकानेक अपीलें, प्रस्ताव तथा प्रचार प्रकाशनों तक सीमित थे।

इस पार्टी ने 1942 के मध्य से देश के भीतर अपनी गतिविधियां विकसित करना शुरू किया। मार्च, 1943 में इसने विभिन्न इलाकों में शक्तिशाली हड़तालों को संगठित करने में भूमिका निभाई। यह इस बात का प्रमाण था कि फासिस्ट-विरोधी जन आंदोलन उभार पर है। इन हड़तालों के चलते वहां के राजा ने मुसोलिनी को सत्ताच्युत करना पड़ा।

फासिस्ट के विरुद्ध इटली की जनता का प्रतिरोध आंदोलन विशेष तौर पर इटली के समर्पण के बाद बहुत तेजी के साथ विकसित हो गया। उत्तरी इटली में, जहां पर जर्मनों का कब्जा बरकरार था, पार्टी की पहलकदमी पर मुक्ति युद्ध संगठित किया गया जिसमें फासिस्ट विरोधी मजदूर, किसान, बुद्धिजीवी और अन्य व्यापक जन-समुदाय शामिल थे। बड़े नियमित छापामार संगठन बनाये गये, जिनकी विशाल बहुसंख्या पार्टी के नेतृत्व में थी।

इसी तरह, कम्युनिस्ट पार्टी की पहलकदमी पर उत्तरी इटली में छापामार इकाइयों और टुकड़ियों के साथ-साथ राष्ट्रीय मुक्ति कमेटियां गठित की गयीं। पार्टी ने इन कमेटियों को जनवादी सत्ता के नये अंग के बतौर बनाने का संघर्ष किया। लेकिन वास्तव में वे विभिन्न पार्टियों का मोर्चा बनी रहीं। इसने इन कमेटियों को जनता की सत्ता के वास्तविक अंग में रूपान्तरित होने की इजाजत नहीं दी।

जहां उत्तरी इटली में पार्टी का संघर्ष आमतौर पर सही रास्ते पर विकसित हुआ था। यह न सिर्फ देश को मुक्ति की ओर ले जा सकता था बल्कि जनता की सत्ता की स्थापना की ओर भी ले जा सकता था। वहीं दक्षिण में तथा राष्ट्रीय स्तर पर पार्टी ने सत्ता पर कब्जा करने का सवाल नहीं उठाया। इसने प्राधिकार के साथ मजबूत सरकार के गठन की महज मांग की। लेकिन यह राजशाही तथा राजा बाडो-ग्लियो को उखाड़ फेंकने के लिए नहीं लड़ी। ऐसे समय में जब क्रांति को आगे

बढ़ाने के लिए देश में अनुकूल स्थितियां मौजूद थीं, तब कम्युनिस्ट पार्टी का कार्यक्रम न्यूनतम था। पार्टी कानूनों और पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर संसदीय समाधान के लिए थी। इसका अधिकतम दावा दो या तीन मंत्रियों के साथ सरकार में हिस्सेदारी तक था।

इस तरीके से इटली की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने को पूंजीवादी राजनीतिक गठजोड़ों में शामिल कर लिया और एक के बाद दूसरी गैर-उसूली रियायतें देती रही। देश की मुक्ति की पूर्वसंध्या पर इसके पास एक बड़ी राजनीतिक व सैनिक ताकत थी जिसको इस्तेमाल करने के बारे में या तो यह जानती नहीं थी या वह इसका इस्तेमाल करना नहीं चाहती थी। पूंजीपति वर्ग के समक्ष इसने स्वेच्छा से अपने को निरस्त्र कर लिया। इसने क्रांतिकारी रास्ते का परित्याग कर दिया तथा यह संसदीय रास्ते पर चल पड़ी। इस प्रक्रिया में यह पार्टी क्रांति की पार्टी से रूपान्तरित होकर सामाजिक सुधारों के लिए मजदूर वर्ग की पूंजीवादी पार्टी बन गयी।

स्पेन के सम्बंध में यह कहा जाना चाहिए कि यहां कम्युनिस्ट इण्टरनेशनल की सातवीं कांग्रेस के निर्देश, फ्रांस व इटली की तुलना में ज्यादा परिणामदायी थे। उनका प्रभाव विशेषतौर पर गृहयुद्ध के दौरान स्पष्ट था। पहले तो कम्युनिस्टों ने लोकप्रिय मोर्चे की सरकार में भागीदारी नहीं की बल्कि इसका समर्थन किया। तब भी कम्युनिस्ट पार्टी ने सरकार के अदृढ़ रुख पर उसकी आलोचना की और मांग की कि वह फासिस्ट खतरे के विरुद्ध , फासिस्टों द्वारा जारी गतिविधियों विशेषतौर पर अफसरों की नस्ल के विरुद्ध, जो उस समय तात्कालिक खतरा बनते थे, कदम उठाये।

17 जुलाई, 1936 को फासिस्ट जनरलों ने अपना षड्यंत्रकारी अभियान शुरू किया। उनका षड्यंत्र अच्छे तालमेल के साथ था। उन्होंने वामपंथी सरकार और लोकप्रिय मोर्चे के गठबंधन से उभरी सरकार द्वारा स्थापित अधिकारियों के नाक के नीचे अपनी षड्यंत्रकारी कार्यवाहियों को अंजाम दिया था। इस खतरे के विरुद्ध सभी फासिस्ट विरोधी शक्तियां लामबंद हो गयी थीं। नवम्बर में लारजो काबालेरो की अगुवायी में सरकार गठित हुई थी जिसमें कम्युनिस्ट पार्टी के दो मंत्री थे। इस प्रकार गणतंत्र की रक्षा के लिए हथियारों के साथ एक संयुक्त मोर्चा गठित हुआ था। सरकार ने बास्क इलाके को स्वायत्तता प्रदान की, फासिस्टों की जमीनें जब्त करके गरीब किसानों में बांट दिया तथा फासिस्टों की सभी सम्पत्तियों का राष्ट्रीयकरण कर दिया था।

शुरू से ही कम्युनिस्ट पार्टी ने मजदूर वर्ग और जनता का प्रतिरोध करने के लिए आह्वान किया था। कम्युनिस्ट पार्टी महज अपीलें करने तक अपने को सीमित नहीं रखे हुए थी बल्कि वह कार्यवाहियों में गयी थी। पार्टी के सदस्य बैरकों में जाकर सिपाहियों को फासिस्टों के चरित्र के बारे में बताते थे और उनको समझाते थे कि वे किस तरह मजदूरों, किसानों और जनता के लिए खतरा बनते हैं। स्पेन की राजधानी मैड्रिड में फासिस्टों द्वारा रचा गया बलात् सत्ता दखल असफल हो गया।

दूसरे शहरों में, जनता, सर्वोपरि मजदूर वर्ग ने गणतंत्र के विरुद्ध खड़े होने वाली सैनिक इकाइयों पर हमला किया और उनको नाकाम कर दिया था। आस्तुरिया में फासिस्ट फौजों के विरुद्ध खनिकों की लड़ाई एक महीने तक चली थी और यह प्रदेश जनता के हाथ में बना रहा। फासिस्ट वहां से नहीं गुजर सकते थे। ऐसी ही बात बास्क क्षेत्र में और स्पेन के अनेक हिस्सों में हुई।

अगस्त के शुरुआती दिनों में ऐसा लगता था कि फासिस्ट जनरल जाने ही वाले हैं और उनकी पराजय पूरी तौर पर हो भी जाती, यदि फासिस्ट इटली और नाजी जर्मनी की फौजों के साथ-साथ स्पेनी मोरक्को और फासिस्ट पुर्तगाल द्वारा भेजी गयी फौजें उनकी सहायता में तत्काल नहीं पहुंच जाती।

ऐसे देश में जहां सेना का नेतृत्व पुरानी नस्ल के प्रतिक्रियावादी राजशाही समर्थक और फासिस्ट अफसर करते थे, देश के भाग्य को सेना पर नहीं छोड़ा जा सकता था। इसलिए कम्युनिस्ट पार्टी ने एक नयी सेना, जनता की सेना के गठन का आह्वान किया और थोड़े ही समय में पांचवीं रेजीमेण्ट के गठन में सफलता पायी। इस रेजीमेण्ट के आधार पर स्पैनी गणतंत्र की सफलता पायी। इस रेजीमेण्ट के आधार पर स्पैनी गणतंत्र की जन सेना का गठन हुआ था। इस जन सेना को स्पैनी युद्ध के दौरान बहुत ज्यादा प्रसिद्धि मिली थी।

फासिस्ट हमले के विरुद्ध कम्युनिस्ट पार्टी का दृढ़ रुख, फासिज्म की बढ़त को रोकने के लिए जन-समुदाय का नेतृत्व करने में निडर होकर सबसे बढ़चढ़ कर उदाहरण पेश करने में इसके सदस्यों ने जो नजीरें पेश की थीं, जिसके 60 प्रतिशत लोग युद्ध के विभिन्न मोर्चों पर लड़ने चले गये थे, इससे व्यापक जन-समुदाय के बीच पार्टी के प्राधिकार और सम्मान को अत्यधिक बढ़ा दिया था।

कोई भी पार्टी विकास करने, प्राधिकार हासिल करने और जनसमुदाय का नेता बनने में तभी सफल होती है जब उसके पास एक सही और स्पष्ट कार्यदिशा होती है और वह उसे लागू करने के लिए संघर्ष में बहादुरी के साथ अपने को झोंक देती है। गृह युद्ध के दौरान स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी ऐसी ही पार्टी हो गयी थी। जुलाई, 1936 में फासिस्ट विद्रोह की शुरुआत और उस साल के अंत के बीच कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों में तीन गुने की वृद्धि हुई थी। और यह इस तथ्य के बावजूद था कि लोग उस समय पार्टी में इसलिए नहीं आते थे कि उन्हें चुनावों में वोट देना है, बल्कि वे प्राण न्यौछावर करने के लिए आते थे।

1939 की शुरुआत में स्पैनी युद्ध का अंत हो गया था। फ्रांको का शासन समूचे देश में फैल चुका था। इस युद्ध में कम्युनिस्ट पार्टी ने अपने सारे प्रयास और शक्तियां फासिज्म को पराजित करने में लगा दी थी। यदि फासिज्म विजयी हुआ था तो इसके विभिन्न आंतरिक कारणों के अलावा, सर्वोपरि इटली और जर्मन फासिज्म के हस्तक्षेप के साथ-साथ फासिस्ट हमलावरों के प्रति पश्चिमी शक्तियों द्वारा अपनायी गयी "गैर हस्तक्षेप की समर्पणवादी" नीति थी।

गृह-युद्ध के दौरान स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी के बहुत सारे सदस्यों ने अपने

प्राणों की आहुति दी थी। अन्य काफी भारी संख्या में फ्रांकोवादी आतंक के शिकार हुए व हजारों-हजार की तादाद में जेलों में ठूंस दिये गये थे जहां वे अनेक वर्षों तक पड़े रहे और उनमें से अच्छी खासी संख्या जेल के अंदर ही मर गयी। फासिस्टों की विजय के बाद स्पेन में जारी आतंक अत्यधिक खूंखार था।

स्पेन के जनवादी जो गिरफ्तारी व जेल जाने से बच गये, उन्होंने फ्रांसीसी प्रतिरोध में हिस्सा लिया और बहादुरी के साथ लड़े थे। स्पेन के कुछ अन्य जनवादी सोवियत संघ चले गये। वे लाल सेना की कतारों में शामिल हो गये थे और उनमें से कइयों ने फासिज्म के विरुद्ध लड़ते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी थी।

अत्यंत कठिन स्थितियों में भी कम्युनिस्टों ने स्पेन के भीतर छापामार युद्ध और प्रतिरोध को संगठित करना जारी रखा था। इनमें से अधिकांश फ्रांकों की पुलिस के हाथों पड़ गये थे तथा उन्होंने मौत का वरण किया था।

फ्रांकों ने मजदूर वर्ग के क्रांतिकारी हिरावल पर स्पैनी जनता के व्यापक समुदाय पर निर्मम प्रहार किया था और इसने कम्युनिस्ट पार्टी पर नकारात्मक प्रभाव डाल दिया। अपने सबसे मजबूत, सबसे अधिक विचारधारात्मक तौर पर लैस, सबसे दृढ़ और साहसी तत्वों को सशस्त्र संघर्ष और फासिस्ट आतंक के दौरान खो देने के बाद स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी कायर निम्न पूंजीवादी व बुद्धिजीवी तत्वों के नकारात्मक व विनाशकारी प्रभाव में आ गयी, जो पार्टी के भीतर ताकतवर हो गये थे। इन्हीं तत्वों ने स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी को एक अवसरवादी व संशोधनवादी पार्टी में तब्दील करने में सफलता पायी थी।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि फ्रांस और इटली की कम्युनिस्ट पार्टियां प्रतिरोध युद्ध में शानदार भूमिका निभाने के कारण लोकप्रिय मोर्चे की सरकारों में हिस्सेदार बनी थीं। लेकिन इसी दौरान ये पार्टियां गैर-उसूली सुलह-समझौतों के चलते विचलनों को शिकार भी हुई थीं। अमरीकी साम्राज्यवादियों ने मार्शल प्लान की कूटनीति का सहारा लेकर फ्रांस और इटली में इनको सरकार से बाहर करने में बड़ी भूमिका निभायी थी। इसके बाद लगभग तीन दशक तक ये मूलतया संसदीय राजनीति ही करती रही। व्यवहार में ये पहले ही सुधारवादी पार्टी की तरह आचरण करती रहीं थी। लेकिन सिद्धान्त में वैसा आचरण करने में, पूर्णतया संशोधनवादी पार्टी में तब्दील होने में ख्रुश्चेव के नेतृत्व में सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी की बीसवीं कांग्रेस में संशोधनवाद की विजय थी। स्पेन की कम्युनिस्ट पार्टी फ्रांको के फासिस्ट शासन के विरुद्ध लगभग चार दशकों तक संघर्ष के बाद, कम से कम प्रतिरोध करने की कार्यदिशा अपनाने की ओर गयी। यह भी ऊपर कहा जा चुका है। इन तीनों पार्टियों के नेतृत्व में पराजयवाद की मानसिकता इन्हें अवसरवाद की ओर ले जाने में कारक बनी।

द्वितीय विश्वयुद्धोत्तर काल में लम्बे समय तक विश्व पूंजीवाद में मौजूद उछाल ने दुनिया की कई कम्युनिस्ट पार्टियों के भीतर "विशेषतौर पर विकसित पूंजीवादी देशों के भीतर", यह धारणा मजबूत करने में योगदान दिया कि समाजवादी

क्रांति अब बहुत दूर की बात है। पहले से मौजूद पराजयवादी मानसिकता इस भौतिक जमीन के प्रभाव में और ज्यादा मजबूत हो गयी।

अमरीकी साम्राज्यवादियों के वर्चस्व में नाटो की फौजों की पश्चिमी यूरोप के देशों में शक्तिशाली मौजूदगी ने भी इन पार्टियों के भीतर मौजूद क्रांति के प्रति निराशा के भाव को और ज्यादा सुदृढ़ करने में योगदान किया। अमरीकी साम्राज्यवादियों के नेतृत्व में नाटो के हस्तक्षेप से फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी का नेतृत्व इतना घबराया हुआ था कि 1968 में व्यापक छात्र आंदोलन के उभार के साथ-साथ जब मजदूर वर्ग, किसान समुदाय और बुद्धिजीवी समुदाय बड़े पैमाने पर अभूतपूर्व रूप से उठ खड़ा हुआ था, तब इसने इनको क्रांतिकारी नेतृत्व देने की जगह पीछे हटाने में बड़ी भूमिका निभायी थी। इटली की कम्युनिस्ट पार्टी के नेता तोगिलियाती तो नाटो से इतना घबराये हुए थे कि उनको लगता था कि यदि वे सुधारवादी होकर भी सत्ता में आये तो अमरीकी वर्चस्व वाली नाटो फौजें उनकी पार्टी को सत्ता से बेदखल कर देंगी।

साम्राज्यवादी-पूंजीवादी दबाव ने पराजयवादी मानसिकता के साथ मिलकर इन पार्टियों को अवसरवादी व संशोधनवादी बनाने में निर्णायक योगदान दिया। इसलिए जब 1973 के बाद पूंजीवाद में संकट दिखाई पड़ा; अमरीकी साम्राज्यवाद का वर्चस्व कुछ हद तक पश्चिमी यूरोप के देशों में कमजोर पड़ने लगा; यूनान, पुर्तगाल और स्पेन में फासिस्ट तानाशाही समाप्त होने लगी; 1975 में वियतनाम युद्ध में अमरीकी साम्राज्यवादियों को पराजय का मुंह देखना पड़ा तब इन पार्टियों ने इनसे अपने लिए सबक यही निकाला कि पूंजीवादी व्यवस्था के गम्भीर संकट से निपटने के लिए जनवादी तरीके से समाजवाद में रूपान्तरण का समय आ गया है। ये अपने संशोधनवाद को और ज्यादा मुकम्मल बनाने की ओर गये। अगर ये मार्क्सवादी-लेनिनवादी जमीन पर खड़े होते तो ये प्रतिकूल परिस्थितियों को और अपने लिए ज्यादा अनुकूल बनाने के लिए संघर्ष कर रहे होते और धारा के विरुद्ध जाने का साहस रखते। जैसे ही अनुकूल परिस्थितियां आ उपस्थिति होती तो मार्क्सवादी लेनिनवादी की तरह निर्णायक प्रहार की तैयारी करती। लेकिन ये संशोधनवाद के दलदल में इतना धंस चुकी थीं अनुकूल स्थितियों पर इनसे सही मार्क्सवादी-लेनिनवादी समाधान की उम्मीद करना बेमानी हो चुका था।

इस तरह, एक समय की शानदार और गौरवशाली संघर्षों में तपी पार्टियां-फ्रांसीसी कम्युनिस्ट पार्टी, इतालवी कम्युनिस्ट पार्टी और स्पैनी कम्युनिस्ट पार्टी-पतित होकर यूरो-कम्युनिज्म के घोर संशोधनवादी सिद्धान्तों पर पहुंची।

पराजित मानसिकता से ग्रस्त, साम्राज्यवाद-पूंजीवाद की शक्तिमत्ता से भयभीत, क्रांति से पलायन करने वाली यूरो-कम्युनिज्म की पार्टियां विश्व पूंजीवादी व्यवस्था की सेवा में तत्पर खुद मार्क्सवाद-लेनिनवाद में तोड़ मरोड़ करने में लग गयी। "ठोस परिस्थितियों के ठोस विश्लेषण" के नाम पर इन्होंने सिद्धान्तों में तोड़-मरोड़ किया। व्यवहारिकता के नाम पर बुनियादी मार्क्सवादी सिद्धान्तों को छोड़ा और वहां की कम्युनिस्ट पार्टी को एक सुधारवादी-पूंजीवादी पार्टी में बदल दिया। इसलिए

लाखों सदस्यों वाली पार्टियां अपने दरवाजे सभी के लिए खोलने के बावजूद अपने देशों में पूंजीवादी पार्टियों की कनिष्ठ साझीदार बनने के लिए ललचती रही और वह भी उन्हें नसीब नहीं हुआ। सिद्धान्तविहीन व्यवहारिकता वस्तुतः पूंजीवादी व्यवहारिकता ही सिद्ध हुई। मार्चिया, बरलिंगर और कैरिलो कम्युनिस्ट आंदोलन के गद्दार थे। इसीलिए इन्होंने अतीत के गद्दारों को पुनर्स्थापित करने की मांग खुश्चेवी संशोधनवादियों से कर डाली। इन्होंने ट्राट्स्की और बुखारिन जैसे गद्दारों को फिर से स्थापित करने की मांग की थी।

ये पूंजीवादी समाज के गर्भ में समाजवादी उत्पादन सम्बंध पैदा करने के नाम पर धुर संशोधनवादी विचार यूरो-कम्युनिज्म प्रतिपादित करने वाले इतिहास के कूड़ेदान में फेंक दिये गये। मजदूर वर्ग की मुक्ति के ये नकारात्मक शिक्षक हैं।

■■■